

In the Light of...



Celebration of International Mother Language Day

International Mother Language Day was celebrated on 21st February, 2017 to mark the importance of mother tongue in social and academic life, learning and for harmonious growth of languages. Professor Avijit Pathak, Professor of Sociology, Centre for the Study of Social Systems, Jawaharlal Nehru University, New Delhi delivered a lecture -Beyond Linguistic Chauvinism: Towards Meaningful Learning, highlighting the importance of learning through mother tongue during the formative years of schooling. Dr. R.R. Koireng of the Department of Education in Science shared his thoughts on My Language 'koren', which is an endangered language today. Professor A.K. Srivastava, Dean (Research), NCERT and Professor K. C. Tripathi, Head of the Department, Professor Sandhya Singh and Professor Sandhya Rani Sahoo talked on the relevance of mother tongue based multilingualism.

The two cultural programmes- nukkad natak, 'meri awaaz suno' by AAHAANG was based on the idea of reinforcing the importance of mother tongue in our social lives and academic lives. and folk dance from Chattisgarh presented by the children of Kendriya Vidyalaya Sangathan primary school located on NCERT campus.



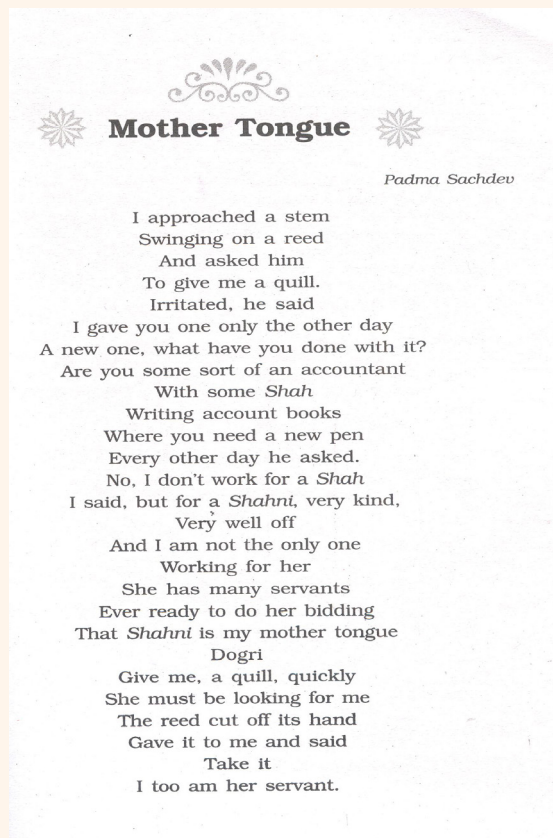
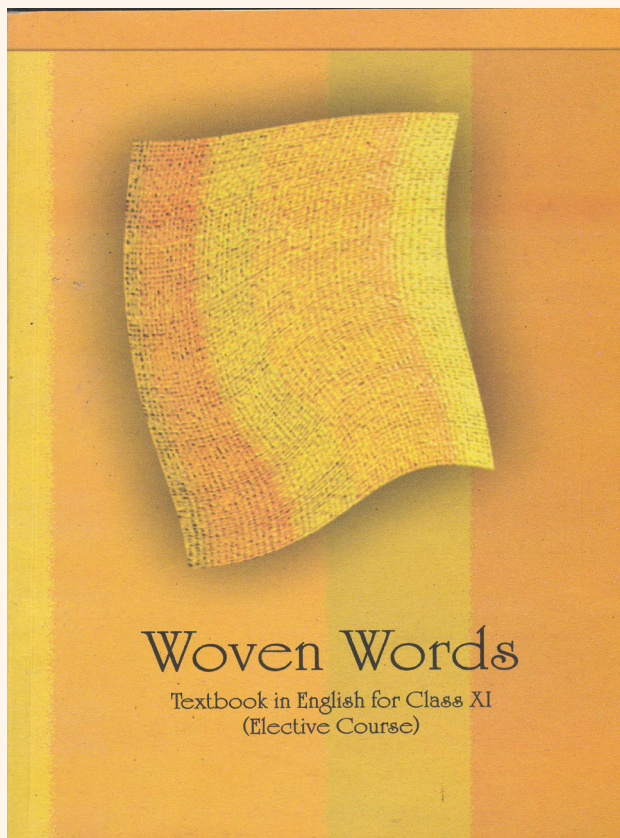
रूपांतरण



Recitations by Padma Sachdev on the occasion of International Mother Language day.

Place: NCERT, New Delhi

Department of Education in Languages, NCERT celebrated the International Mother Language Day on 21st February, 2018 on NCERT Campus with talks, discussions, and a street play to highlight the importance of mother tongue in education and social life. Padma Shri Padma Sachdev, first woman poet of Dogri Language and Dr. Anamika, Eminent Hindi Poet and Professor of English, Delhi University delivered talks on mother tongues and their importance in society and in education. This was followed by interactions with the writers on various issues and problems of language and language education today and street play, nukkad natak on Poetry Collage, highlighting the importance of all languages in society and in one's life by Group Ahaang, New Delhi. Research fellows of NCERT contributed through folk stories, and songs. Director, NCERT, Prof. H.K. Senapaty, Dean Academic Prof. Saroj Yadav and Prof. Sandhya Singh, Head, Department of Education also spoke on the occasions. Teachers, students, academics, members of faculty and staff, participated in the celebrations.



As soon as children find something that interests them they lose their instability and learn to concentrate.

-Maria Montessori



पद्मा सचदेव

दिन

दिन निकला या समाधि योगी ने खोली है ?
साँझ खिलती आयी
या निकल गयी कोई डोली है ?
कोयल कूकी कि कोई बच्चा हैसा
या गली से कोई डोगरी बोलता निकल गया ?

कलम

कलम यह सरकण्डे की
टहनी से झूल रही !
टहनी से कलम माँगी—
खोजकर बोरी है वो—
अभी परसों ही तो दी थी नई कलम,
वो कहाँ गयी, कहो !
डरते-डरते कहा मैंने—

छिलती-छिलती हुई खतम !

पूछा उसने—

क्या किसी बही खाते पर हो नौकर ?
हिसाब-किताब के लिए कलम चाहिए रोज नई ?
कौन है शाह जिसकी दुकान पर इतना काम होता है ?
मैंने धैर्य से कहा—

मैं शाह नहीं, शाहनी का काम करती हूँ।

वो शाहनी बड़ी बख्तावर है।

उसके घर काम करने वाली अकेली मैं नहीं।

कितने ही चाकर हैं उसके—

कहती हैं औरतें

द्वार पर खड़े हैं हाथ बाँधे।

वो है मेरी मातृभाषा डोगरी।
निकालो कलम, ढूँढती होगी मुझे वह,
जल्दी करो।

सरकण्डे ने अपनी बाँह कांटी,
दी मुझे और फिर कहा—
“ले जा इसे, मैं भी चाकर हूँ उसीका!”

काला मुँह

मुझे तो किसीने भी न बताया था
कि जीने की राह गेहूँ के खेत में से होकर जाती
पर जैसे माँ का दूध पीना मैंने अपने-आप सीख लिया,
एक दिन घुटनियों चलती

गेहूँ के खेत में अपने आप जा पहुँची।
गेहूँ के साथ-साथ चने ही उगे हुए थे।

मेरी माँ ने हरे-हरे चने

गर्म राख में भूनकर

मुझे खाने को दिए।

मैंने मुँह में चुभलाकर हँसते-हँसते फेंक दिए।

अभी मेरे दाँत भी नहीं आए थे !

भुने हुए चनों से मेरा सारा मुँह काला हो गया।

काली राल टपकने लगी !

माँ ने तो मुझे ये भी नहीं बताया था

कि जब भी दो रोटियों की आशा में कोई आगे बढ़ता है

उसका मुँह जरूर काला होता है !

कहती हैं औरतें



As soon as children find something that interests them they lose their instability and learn to concentrate.

-Maria Montessori

भाषा की आवाज़

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह

21 फरवरी 2018

भाषा शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-110016

"भाषा की आवाज़"

सादर आमंत्रण

वक्ता : पद्म श्री पद्मा सचदेव

(डोगरी भाषा की प्रथम कवयित्री एवं लेखिका)

डॉ. अनामिका

(कवयित्री एवं लेखिका)

"कविता कोलाज"

आहंग', समूह की प्रस्तुति

दिनांक : 21 फरवरी 2018, दोपहर 02.15 बजे

स्थल : कमरा सं. 202, द्वितीय तल, सी.आई.ई.टी. (चाचा नेहरू भवन)

एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली - 16



रूपांतरण

भाषा शिक्षा विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-110016

संवाद-3

भाषा एवं भाषा शिक्षण व्याख्यान माला के तीसरे व्याख्यान में
सादर आमंत्रण

विषय : भाषा शिक्षा एवं समाज

वक्ता : श्री राहुल देव

लेखक, शिक्षाविद् एवं मीडियाकर्मी

दिनांक : 31 जनवरी 2018, 2.30 बजे

स्थल : कमरा नं. 202, द्वितीय तल, सी.आई.ई.टी. (चाचा नेहरू भवन)

एन.सी.ई.आर.टी.

Department of Education in Languages

National Council of Educational Research and Training, New Delhi-16
cordially invites you to

samvaad—3

Third Lecture in the Lecture Series on
Language and Language Education
on 31st January, 2018
at 2.30 p.m.

in
Room No. 202, 2nd floor, CIET (Chacha Nehru Bhawan) NCERT Campus
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016

by

Shri Rahul Dev

Author, Educationist and Media Personality
on

Language, Education and Society



Women's Day

Department celebrated International Women's day on 8 March 2018

The participants were of the view that ensuring gender equality is a major issue today. Social awareness is essential for bringing this issue to the focus and consciousness of the people. Literature can play a significant role as it is the reflection of social fabric. There is need to develop critical perspective among learners to understand the importance of bringing gender equality in our society.



Women's day—every day
epitome of courage, endurance
selflessness, willpower, courage
home-maker, professional, tiller, helier
managing, performing all in all
adversaries, misfortunes, mishaps
failing to effect, inner resolve faith
undefeated iron and steel will-power

ingrained attitude, never to give-up
take all challenges, thorns, blocks
learning lessons, carving pathways
scripting their own destiny
harbinger of change
leaders of a better
Tomorrow.

Gouri Srivastava
DESS NCERT

World community across the globe
designates days, months, years
eulogising persons societal concerns
to remind, revisit, commit ourselves
for upliftment, betterment, amelioration
of downtrodden, marginalized
promises of quality, healthy life
to All.

Women's day, marking, reminding
the torchbearer, pathfinder
amazing leaders, contributor
known, lesser known mortals
their spirits high, willpower
in all adversaries, trying times.
leaving inspiring accounts
oral, documented, unfolding
for present, future, and eternity
lasting, enduring message
that come what may
hail, storm, turbulances
never give-up, try, try again
breathing doing every bit
HUMANITY.

Gouri Srivastava
DESS NCERT



*Boats of dreams
on the waves of ocean
dancing and sprinting
Sounds of laughter
Rippling and resounding
echoing music of life
inviting laughter and joy
fused into tinkling of bells
Sorrows, grief, shed and unshed tears.
Untouched, unseen
Sending letters of hope to boats of dreams.*

*Meenakshi Khar
DEL NCERT*

मैं किसकी औरत हूँ
कौन है मेरा परमेश्वर
किसके पाँव दबाती हूँ
किसका दिया खाती हूँ
किसकी मार सहती हूँ...
ऐसे ही थे सवाल उसके
बैठी थी जो मेरे सामनेवाली सीट पर रेलगाडी में
मेरे साथ सफर करती

उम्र होगी कोई सत्तर-पचहत्तर साल
आँखे धँस गयी थीं उसकी
मांस शरीर से झूल रहा था
चेहरे पर थे दुख के पठार
थीं अनेक फटकारों की खाइयाँ



सोचकर बहुत मैंने कहा उससे
'मैं किसी की औरत नहीं हूँ
मैं अपनी औरत हूँ
अपना खाती हूँ
जब जी चाहता है तब खाती हूँ
मैं किसीकी मार नहीं सहती

और मेरा परमेश्वर कोई नहीं'

उसकी आँखों में भर आई एक असहज खामोशी

आह! कैसे कटेगा इस औरत का जीवन!

संशय में पड गयी वह

समझते हुए सभी कुछ

मैंने उसकी आँखों को अपने अकेलेपन के गर्व से भरना चाहा

फिर हँस कर कहा 'मेरा जीवन तुम्हारा ही जीवन है

मेरी यात्रा तुम्हारी ही यात्रा

लेकिन कुछ घटित हुआ जिसे तुम नहीं जानती—

हम सब जानते हैं अब

कि कोई किसीका नहीं होता

सब अपने होते हैं

अपने आप में लथपथ-अपने होने के हक से लकड़क़

यात्रा लेकिन यहीं समाप्त नहीं हुई है

अभी पार करनी हैं कई और खाइयाँ फटकारों की

दुख के एक दो और समुद्र

पठार यातनाओं के अभी और दो चार

जब आखिर आएगी हर वह औरत

जिसे देख तुम और भी विस्मित होओगी

भयभीत भी शायद

रोओगी उसके जीवन के लिए फिर हो सशक्त

कैसे कटेगा इस औरत का जीवन फिर से कहोगी तुम

लेकिन वह हँसेगी मेरी ही तरह

फिर कहेगी—

'उन्मुक्त हूँ देखो,

और यह आसमान

समुद्र यह और उसकी लहरें

हवा यह

और इसमें बसी प्रकृति की गंध सब मेरी हैं

और मैं हूँ अपने पूर्वजों के शाप और अभिलाषाओं से दूर

पूर्णतया अपनी'



-सविता सिंह